

समाधि (भाग)

अधि पत्रिका के अनुसार

योगचित्तवृत्ति निरोधः ।

यदि योग समाधि
अनुभव योग समाधि
का ही कथन है। एतद्विषय की सर्व सांन्यास कर्तव्य
सकल प्राण है। जो साध्यक को प्रधान योगात्मक
योगी जीवन हो जाता है। यही योग या समाधि

समाधि की दो अवस्थाएँ कानी गयी हैं :-

(1) साध्यक समाधि :- इस समाधि में ज्ञान, संतान, विषय का विषय से रहित, अज्ञान रूप से च्येय विषय का ज्ञान हो वह साध्यक समाधि है।

साध्यक समाधि या उच्छा है :-

(1) चित्तकान्ठ :- इस अवस्था में च्येय विषय या प्रधान कर्तव्य किया जाता है तथा जो विषय साध्यक वह चित्त की मन में उल्लेखित है।

(2) विचारकान्ठ :- एतद्विषय, सुख, दुःख, रस, नाद्यादि सुख तथा अन्तःकरण के विषयों में उन्ने देहा-काल-समाधि सहित विचार किया जाता है जो उसे साक्षात् उल्लेख है।

(3) आनन्दकान्ठ :- इस अवस्था में आनन्द ही अनुभव होता है। च्येय विषय की उल्लेखिता के कारण उच्छा है। सुखरूप आनन्द ही अनुभव होता है।

(4) आसक्तिकान्ठ :- अज्ञान चित्तमात्र रूप में ही जानना ही आसक्ति है। एतद्विषय उच्छा के उच्छा में ही उन्नत जाते हैं चित्त विषयों ही आसक्ति है जो उच्छा उल्लेख है तथा जो एतद्विषय विषयों से जोड़ा चित्त-आसक्ति सततमात्र रूप में रहती है जो सासक्ति उल्लेख है।

यदि उच्छा समाधि ही अनुभव है। विभिन्न भावों का उच्छा, मन, उच्छा समाधि से चित्तों का ही ही मान होता है।

साध्यक समाधि :- साध्यक समाधि ही चित्तवृत्ति निरोधक है, अतएव इस समाधि में सभी उच्छा ही चित्तवृत्तियों का लय हो जाता है। जो कि भी योगी समाधि

का आभार लिन गही रहे जात। इस डाक्टरों ने
श्री जी सुभद्रा सांसाही विषयों से जावन ही है
केवल्य में मिन हो जात है। यह अलिख
नहीं है।

२५

२०२०